भूमिका

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में कमल कुमार के समग्र कहानी संग्रहों और समग्र उपन्यासों का समाजशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। विवेच्य शोध-प्रबंध में सिद्धांत और व्यवहार रूप में साम्यता लाने का प्रयास किया गया है जिस कारण प्रस्तुत शोध-प्रबंध 'समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा - साहित्य का अनुशीलन' को पूर्णतः नवीन एवं मौलिक रूप दिया गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध को सुचारू ढंग से सम्पन्न करने हेतु इसे पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है जिसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

अध्याय एक-इस अध्याय में 'साहित्य का समाजशास्त्र : स्वरूप विश्लेषण' का अध्ययन किया गया है। जिसमें समाज और साहित्य की अवधारणा, समाजशास्त्रीय अध्ययन : पाश्चात्य एवं भारतीय विचारक, समाजशास्त्रीय अध्ययन : परिभाषा एवं क्षेत्र और कथा साहित्य सम्बन्धी समाजशास्त्रीय आलोचना की प्रविधि आदि का वर्णन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है। इसके बाद साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन के अर्थ और विविध विद्वानों की परिभाषा एवं मौलिक विचारों को प्रस्तुत किया गया है। साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन की विषय वस्तु, ऐतिहासिक विकास, सिद्धांत तथा प्रमुख घटक तत्वों को विस्तृत रूप में वर्णित किया गया है।

अध्याय दो-यह अध्याय 'कमल कुमार और उनका साहित्य : संक्षिप्त परिचय' पर आधारित है। प्रस्तुत अध्याय लेखिका के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों और उनकी कृतियों का संक्षिप्त परिचय करवाता है। कमल कुमार के लेखन में जिस विविधता की झांकी देखने को मिलती है वो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की देन है। इसमें कहानी - संग्रहों, उपन्यासों, काव्य-संग्रहों, आलोचना - संग्रहों और आत्मकथा का संक्षिप्त विवरण का अध्ययन किया गया है ।

अध्याय तीन - यह अध्याय 'समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के उपन्यास' पर आधारित है। प्रस्तुत अध्याय में पारिवारिक समस्याएं, पति-पत्नी सम्बन्ध का चित्रण, मां - पुत्र - पुत्री सम्बन्ध का चित्रण, नारी चेतना का चित्रण, विधवा समस्या का चित्रण, और आत्महत्या का चित्रण है। इसके आगे आर्थिक समस्या निम्न – मध्य वर्ग की समस्या, आर्थिक अभाव की समस्या, बेरोजगारी की

समस्या, तथा धार्मिक समस्या में धार्मिक मान्यताओं का विवेचन और राजनीतिक समस्या का वर्णन किया गया है। यह समाज के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

अध्याय चार-प्रस्तुत अध्याय 'समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार की कहानियां' पर आधारित है। इस अध्याय में पारिवारिक समस्याएं पारिवारिक विघटन की समस्या, पारिवारिक एवं परस्पर सम्बन्धों की समस्या है। इस तरह सामाजिक समस्याएं- विवाह - तलाक की समस्या, भुख एवं गरीबी की समस्या, स्त्री मुक्ति का चित्रण एवं वृद्धावस्था की समस्या है। आर्थिक समस्या में धन-लालसा का चित्रण, बेरोजगारी की समस्या और धार्मिक समस्याएं–धर्मान्धता की समस्याएं, समाज में व्याप्त कुरीतियाँ एवं रूढ़ियां और राजनीतिक समस्याएं है। इन सभी का गहन अध्ययन किया गया है।

अध्याय पांच-यह अध्याय 'कमल कुमार के कथा साहित्य का भाषा वैशिष्ट्य' पर आधारित है। इसमें इनके कथा साहित्य के भाषा शिल्प पर अध्ययन किया गया।

इसके पश्चात् समग्र अध्यायों को विश्लेषण एवं अध्ययन के आधार पर उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है । और उपसंहार के पश्चात् संदर्भ ग्रंथ-सूची दी गई है।

किसी भी एक दौर की सामाजिक परिस्थितियाँ पृष्ठभूमि और परिवेश के बावजूद कमल कुमार की रचना प्रक्रिया सृजन कर्म और अभिव्यक्ति एकदम सामाजिक धरातल पर सफल होती है। विषय के धरातल पर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक संदर्भ समान हो सकते हैं किन्तु इनको अभिव्यक्त करने वाले पात्र और अभिव्यंजना पद्धति भिन्न होती है। यहां पर मन मीमांसा करता है कि समान परिवेश एवं युग बोध के बावजूद रचना प्रक्रिया स्थूल रूप में समान होते हुए भी सूक्ष्म रूप में एक-दूसरे से भिन्न क्यों और कैसे होता है। कमल कुमार नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की पक्षधर हैं। इन्होंने पुरुष की निरंकुशता को ध्वस्त कर स्त्री को अपनी शक्ति खुद पहचानने की बात कही है। हिन्दी कथा साहित्य को समृद्धशाली बनाने में पुरूष लेखकों के साथ-साथ महिला लेखिकाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक महिला लेखिका में डॉ० कमल कुमार का महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी लेखनी का केन्द्रीय बिन्दु प्रमुख रूप से नारी और समाज में उसकी स्थिति

है। वह कभी भारतीय नारी तो कभी पाश्चात्य नारी की स्थिति से पाठकों को रू-ब - रू करवाती हैं। वह नारी – स्वतंत्रा की प्रबल पक्षधर हैं। उसे हर हाल में अपने पैरों पर देखना चाहती हैं।

कमल कुमार ने देश-विदेश की अनेक यात्राएं की हैं। वे लोगों से मिलीं और उनकी समस्याओं को निकट से देखा समझा और उसे आत्मसात करके अपनी रचनाओं में रचा है। इनकी रचनाओं में रूग्ण मान्यताओं के प्रति विद्रोह, स्वस्थ आधुनिक दृष्टिकोण, नष्ट होते पारंपरिक मूल्यों की स्थापना, नारी जागृति आदि मुख्य रूप में आई है। वह समाज में पारिवारिक समस्याओं को लेकर बहुत ही सजग रही हैं। समाज मे धर्म, अर्थ और राजनीतिक विवेचन से परिवार की समस्या को दर्शाया है। समाज में व्याप्त तमाम तरह की समस्याओं को भी अपनी रचना प्रक्रिया का माध्यम बनाया जिसमें सामाजिक विवेचन की परिकल्पना की जाती है कि सामाजिक प्रारूप का स्तर कैसा होना चाहिए। साहित्यकार युग के प्रति सचेत रहकर साहित्य सृजन करता है। तथा इस दृष्टि से लेखिका का कथा - साहित्य युग सत्य को पहचानने की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इनके कथा - साहित्य में आधुनिक समय में व्याप्त उन सभी समस्याओं को उजागर किया गया है जो हमारे समाज को अन्दर ही अन्दर से खोखला किए जा रहीं है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि कमल कुमार के कथा - साहित्य में समाजशास्त्रीय निकष की दृष्टि से समाज व साहित्य के सम्बन्ध को समझा गया है। विभिन्न दृष्टियों की सहायता से समाज का विशद् विवेचन किया गया। समाज में व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करते सामाजिक परिवेश को विभिन्न आधारों पर कई स्तरों में विभाजित किया गया है। इसमें सामाजिक श्रेणी एवं समाज के आदर्श व नियम हैं और मानव के आचरण में ढालते सामाजिक मूल्य है। यह सभी समाज में व्यक्ति के व्यवहार उसकी अंतःक्रियाओं को पूर्ण रूप में प्रभावित करते हैं। समाज शास्त्र के इन तत्वों को आधार बनाकर 'साहित्य का समाजशास्त्र : स्वरूप विश्लेषण' किया गया है। समाज में मनुष्य कैसे व्यवहार के इन मानकों द्वारा नियंत्रित किया जाता है समाज की व्यवस्था बनायें रखने में मानकों का क्या योगदान है।? इसका अध्ययन शोध प्रबंध में किया गया है। समाज में भेदभाव के भिन्न–भिन्न आधारों में, समाज का वर्गों व स्तरों में विभाजन कैसे समाज में प्रभावित करता है इसे सामाजिक श्रेणी द्वारा समझा जा सकता है। सामाजिक मूल्यों के बदलने व

विघटन से समाज में क्या स्थिति उत्पन्न होती है और लेखिका के कथा - साहित्य में कौन से सामाजिक मूल्य प्रभावी बन पड़े हैं इसका अध्ययन शोध-प्रबंध द्वारा किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध पूर्ण रूप में नवीन विषय पर किया गया है। यह शोध-प्रबंध एक पूर्ण मौलिक अध्ययन है। पूर्व में किए गए अन्य किसी भी शोध कार्य से पूर्णतः भिन्न है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध कार्य को करते समय जिन कठिनाईयों का भी सामना पड़ा, उन्हें सहर्ष स्वीकार करती रही हूं। किन्तु फिर भी दूसरे ज्ञानानुशासन के कारण हिन्दी में पुस्तकों का अभाव होना शोध कार्य में बाधा बनता रहा है । इन सभी बाधाओं को पार करके आज यह शोध-प्रबंध कई अपेक्षाओं के साथ आप सबके सम्मुख प्रस्तुत है। अतः इस शोध-प्रबंध में हुई त्रुटियों के लिए आप समस्त विद्वजनों से क्षमाप्रार्थी हूँ।